

जिनागर्नों की मूल भाषा (फोल्डर नं. 1060)

मुख्य टाईटल

प्रकाशकीय

संपादकीय

दो शब्द

अनुक्रमणिका

Excerpts from Messages and Opinions

भूमिका

Introduction

विषय प्रतिष्ठापन

खण्ड – 1 Section - 1

A Few Observations on the History and Development of MIA. Languages and Dialects. H.C. Bhayani	73
Jaina Agama Texts and Their Problems in Editing. S.R.Banerjee	78
The Myth of “Prakritih Samskrtam” R.P.Poddar	84
Place of Ardhamagadhi and Suraseni Languages of Jain Canonical Works in the Evolution of MIA. Languages. K.R.Chandra	89
A Glimpse of Some of the Archaic Linguistic Traits Inherited by Agamic Ardhamagadhi From Vedic Chandas Speech. N.M.Kansara	115
Old Linguistic Elements in the Ardhamagadhi Language in Comparision to Sauraseni. D.N.Sharma	119

खण्ड – 2 Section - 2

जैन आगर्नों की मूल भाषा अर्धमागधी या शौरसेनी. सागरमल जैन	127
पुरातत्त्व और इतिहास के परिप्रेक्ष्य में शौरसेनी भाषा की प्राचीनता. मधुसूदन ढांकी	159
आगमसूत्रों की वर्तमान भाषा. समणी चिन्मयप्रज्ञा	161
शौरसेनी प्राकृत में प्राचीन भाषा-तत्त्व खारवेल के प्राचीन (ई. सन् पूर्व द्वितीय-प्रथम शताब्दी) काल के शिलालेख की भाषा के साथ. प्रेम सुमन जैन	169
अर्धमागधी प्राकृत की तुलना. शोभना आर. शाह	186
तीर्थकरों की उपदेश-भाषा. जितेन्द्र बी. शाह	194
मौर्य सम्राट् अशोकना अभिलेखोनी भाषा साथे अर्धमागधी प्राकृतनुं सादृश्य. भारती शेलत	199

परिशिष्ट Appendix

“प्राकृत विद्या” में प्रो. टाँटियाजी के नाम से प्रकाशित उनके व्याख्यान के विचार बिन्दुओं की समीक्षा. सागरमल जैन	209
शौरसेनी प्राकृत के सम्बन्ध में प्रो. भोलाशंकर व्यास की स्थापनाओं की समीक्षा. सागरमल जैन	223